इन्टरव्यू १५

प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: मेरा नाम वजुरूद्दीन है।

प्र: ये सब आपके करघे हैं ?
ज: हां तीन है, एक भाई को दिए, हैं।

प्र: आपका कुल करघे से महीने में कितना निकल आता होगा ?
ज: बहुत मिलता है तो 3500-3000 रुपये।

प्र: मजदूरी मिलाकर या छोड़कर ?
ज: हां, और कट जाता है तो नुकसान हो जाता है।

प्र: मजूरी काटकर आपको तीन हजार मिलता ?
ज: नहीं, 2000 मिलता है।

प्र: साड़ी आपकी कितने में बिकती है ?
ज: 1800 में बिकती है।

प्र: इसमें लगाते कितना है ?
ज: वहीं 1600-1700 रुपया।

प्र: तो मात्र 150-100 रुपये बचते हैं ?
ज: हां।

प्र: कहां बेचते हैं इसे ?
ज: चौक में बेचते हैं।

प्र: किसको बेचते हैं ?
ज: चौक में गद्दीदार को।

प्र: गद्दीदार कितने में बेचता होगा ?
ज: वहीं 200 रुपये बढ़ाकर जो लोग ग्राहक को बेचते है उनको प्रॉफिट है।

प्र: आपका भी ये पुश्तैनी काम होगा ?
ज: हां।

प्र: आपके पिता जी के टाइम में इतना ही करघा था कि बढ़ा है ?
ज: नहीं इतना ही था, बढ़ा नहीं।

प्र: तीन ही करघे थे ?
ज: नहीं हमारे पास तो 10-12 करघें थे, लेकिन जब से बाबरी मस्जिद वाला दंगा हुआ उसके बाद से हमारा काम धीरे-धीरे ठप्प हुआ है।

(साइड ए खत्म)

जब से ये शहीब से हमलोगों धंधा एकदम नॉरमल हो गया है उसके पहले तो हम लोगों की साड़ी जाती थी और पैसा भी अच्छा मिलता था। आज साड़ी जा रही है तो हम लोगों का पैसा भी ठिक तरह नहीं मिल पा रहे हैं, एक तानी बीने पत्ता कटाना हुआ डिजाइन चेन्ज करना हुआ डिजाइन चेन्ज करने का मतलब हजार हजार रुपया चला जाता है।

प्र: लेकिन बाबरी मस्जिद गिरने के साथ इसका क्या सम्बन्ध है ?

ज: इसका यह सम्बन्ध है सरकार का हमपर बिलकुल नजर नहीं रखती यदि वो एक्सपोर्ट खोल दे तो व्यापारी हमारे पास फिर से आएंगे एक समय वो था जब व्यापारी खुद चलकर हमारे पास आते थे आज हमलोग उनके पास जाते हैं तो वो हमसे मुंह मोड़ कर बात करते हैं।

प्र: मतलब सरकार के एक्सपोर्ट नीति में बदलाव आया है ?
ज: हां इसमें बदलाव आया है।

प्र: बाबरी मस्जिद गिरने के पहले ये सब ठीक था मतलब पहले एक्सपोर्ट नीति ठीक थी ?
ज: हां
रूकावट
समझ लिजिए कि धार्मिक मुद्दा जब से चला तब से इसमें बहुत बदलाव आ गया।

प्र: कैसे ?
ज: धार्मिक मुद्दा आ गया, जहां धर्म का पालन होगा वहां दो ग्रुप बन जायेगा, जब ग्रुप बन गया तो हर धंधा चौपट हो जायेगा। हम लोग यह जान रहे थे कि आजादी हम सब मिल कर पाये हैं लेकिन नेता लोग अपना खेल खेलकर अपना जेब भर रहे हैं गरीब की समस्या नहीं समझ रहे हैं। हम लोग अभी भी वहीं हैं, वे केवल ही लोगों को लड़ा रहे मस्जिद-मस्जिद करके सिर्फ ये राजनीति है। हमारे कारीगर हिन्दू है लेकिन हम लोग ये भेदभाव नहीं करते। आज भी मिलजुल कर हैं। मारा जाता गरीब आदमी।

प्र: एक्सपोर्ट के बारे में क्या कह रहे थे आप ?
रूकावट
ज: जब राजनीति आ जाती है ना तब एक्सपोर्ट व्यापार हो जाती है। एक्सपोर्ट तो हर जगह खुला है प्रधानमंत्री तो हर जगह संपर्क कर रहे हैं, चीन से, अमेरिका से, ब्रिटेन से, जर्मनी से हर जगह से बिजनेस चालु है, लेकिन जब राजनीति आ जाती है ना। ध्यान नहीं देते इधर। भेदभाव से ये बनारसी काम नॉरमल हो रहा है। अगले साल गुजरात का दंगा हुआ उसे काफी प्रभाव हुआ हम लोगों का 75प्रतिशत माल गुजरात में सेल होता है। वहां जब रायट हो गया बड़े-बड़े व्यापारी लुट गये तो माल क्या लेंगे वहां जलजला आया भुकंप आया तो मंदा हो गया बराबर गुजरात में मॉर्केट डाउन हो रहा है। हम लोगों का आइटम यहीं रहता है इस वक्त 12 दिसंबर को जो चुनाव रख दिया है उससे और डाउन हो गया है।

प्र: अच्छा एक्सपोर्ट नीति में कोई बदलाव आया है कि नहीं ?
रूकावट
ज: नही उसमें कोई बदलाव नहीं आया है। पहले से तो बहुत ज्यादे एक्सपोर्ट खुल गया। माल बिल होना चाहिए लेकिन माल बिल नहीं हो पा रहा राजनीति के कारण हम लोग मेन इसी चीज के कारण मात खा रहे है वरना कोई भी धंधा मात नहीं खाता हर धंधे में यही बात है केवल यही नहीं की बनारसी में हैं फायदा हमे केवल 2000 पड़ रहा है इस साड़ी में तीनों काम से अब फिर डिजाइन चेंज करना होगा या तो जो दो हजार मिला वो डिजाइन चेंज करने में ही चला जायेगा। खाली हम लोग बस खा रहे हैं अगर पैसा बचे तो हम आगे की भी कुछ सोचें।

प्र: ये धंधा जो बंद होने के कागर पर है यह कब शुरू हुआ है ?
ज: यह धंधा
रूकावट

बाबरी मस्जिद की राजनीति जब से चली है तब से ये मंदा हो गया है। और अभी तक तो वो मंदी ही आ रही है तेजी का कोई संभव नहीं है। पहले व्यापारी लोग पैसा लेकर खड़े रहते थे कि साड़ी चाहिए आज हम लेकर जाते है तो कहते है दो चार दिनो बाद आइए हमारी साड़ी बराबर जा रही है लेकिन वहां से पैसा नहीं आ रहा है। जब हमे हजार की जरुरत है तो 500 मिलता है। इसी में हम कारीगर को देते और अपना भी चलाना है। और से राजनीति हल होने वाली नहीं है। धार्मिक मुद्दा कभी हल नहीं होता।

प्रः इसके विरोध में आप लोग करने का कुछ सोच रहे है कि कोई समिति बनाये ?
रूकावट
जः क्या सोचे इसके विरोध करके हमे मरना है। हमारे ऊपर हर तरह को फोर्स पड़ जायेगा। राजनीति का भी और पुलिस वालों का भी। इसमें हम कुछ करना चाहते हैं तो बड़े लोग रोक देते है। पहले 12 बजे राज को भी साड़ी पूजती तो हम ले जाते थे तो कोई नही पूछता था लेकिन अब 10 बजे रात में लेकर निकले तो पुलिस पूछने लगती है कहां ले जा रहे इसमें क्या है इतनी रात को क्यो जा रहे हो। इसलिए हर आदमी डरता है। हर आदमी को अपनी इज्जत प्यारी है। अभी दो रोज पहले हमारे दोस्त की दो साड़ी छीना गई। वो साढ़े ग्याहर बजे राज को जा रहा था। केवल धक्का लगा था। पुलिस वालों ने साड़ी छीन ली। कमच्छा में हुआ ये सब। हम लोग कुछ कह नही सकते वर्दी है सरकार हम लोग को छूट रही है लेकिन हम लोगों तक इमदाद नहीं आ रहा है। हम लोग अनपढ़ आदमी है जिन लोगों का पहुंच है वो अपना जेब भर लेते हैं। सरकार की हर गरीब पर नजर है लेकिन गरीब वहां नही पहुंच पा रहा है। बहुत योजना निकाल दिया है। सरकार हम लोगों के लिए बहुत साथ की है लेकिन अगर वो 35,000 रुपया दे रही है तो उसमे से हमारा 10 हजार रुपया चला जाये तो हमारा क्या फायदा होगा, हाथ लगेगा 25 हजार तो क्या फायदा। सरकार हम लोगों का बहुत सहयोग करना चाह रही है लेकिन बीच में लोग खा जा रहे हैं।

प्रः आप लोग यूनियन वगैरह कभी बनाये हैं ?
जः बुनकर यूनियन तो है लेकिन इधर नहीं है अभी ये, बस्ती तो नया है लेकिन मदनपुरा में इसकी यूनियन है।

प्रः वो कैसे मुद्दे उठा रही है ?
जः वो कोई मुद्दे नहीं उठा रही वो केवल अपना देख रही है बड़े लोग की है छोटे लोग नहीं। जैसे नेता अपना खेल, खेल रहे है वैसे ही यूनियन वाले भी कर रहे हैं। सरकार से हमारी यही गुजारिश है अगर हमें कुछ देना चाह रही है तो डायरेक्ट आये तभी कुछ हो सकता है जैसे आप इन्टरव्यू लेकर जा रही हैं तो ये बाते सरकार तक पहुंचाये तो फायदा है देखिये अभी खिड़की का पहला तक नहीं लगा है।
सरकार अगर मजबूती चाह रही है वो हम लोग देने को भी तैयार है। सरकार खुब सहयोग दे रही है उसमें कोई शिकवा नहीं है पर
सरकार के तरफ से यदि कुछ योजना आया भी तो उसमें कुछ ना कुछ अड़चन लग जाता है कि आप जूनियर हाई स्कूल पास नहीं है तो गरीब आदमी क्या करें, वो बोलेगा कि आप दश हजार रुपया दे तो साहब को देकर सरकार को मना ले तब आपको रुपया मिल जायेगा। किसलिए क्योंकि नाइन्टी परसेन्ट समझ लिजिए की अनपढ़ लोग है। इसमें कौन पढ़ा लिखा है। सरकार ये चलाई है कि बच्चा कोई काम ना करने पाये अब गरीब आदमी के पास अगर चार बच्चा है तो वो कैसे चलायें। एक बच्चा को पढ़ाने का 200 रुपया है तो चार का 600 रुपया हुआ आठ सौ में उसका घर चलेगा। सरकार स्कूल का खर्चा उठा रही है वो उसके घर का खर्चा भी उठाये।

प्रः आपके भी बच्चे हैं ?
जः हां तीन बच्चे हैं एक आठ साल का दूसरा छह साल का उससे छोटा चार साल का।

प्र: पढ़ने जाते हैं ?
ज: हां

प्र: बड़ा होकर वो भी इसी लाइन में आयेगा ?
ज: हां लेकिन हम तो नहीं चाहते, बस काम सिखा दे रहे हैं।

प्र: क्यों ?
ज: इसलिए कि काम की समस्या बिगड़ती जा रही है इससे हम उसे दूर रखना चाह रहे हैं। बस हुनर सिखा देना चाहते हैं।
रूकावट
बिजनेस में रखना चाहते हैं, हां या कोई और सरकारी नौकरी हो।

प्र: बुनकारी के अलावा ?
ज: हां बुनकारी के अलाा कोई भी काम में डालना चाहते हैं। काम सिर्फ इसलिए सिखाना चाहते हैं कि कभी आढ़े-गाड़े पड़ गया तो अपनी दाल रोटी चला सके।